फिर से दौड़ा जादुई घोड़ा

मैल्कौम योर्क

चित्रकार जैन लूई

फिर से दौड़ा जादुई घोड़ा

मैल्कौम योर्क

चित्रकार

जैन लूई

अनुवाद

अरविन्द गुप्ता

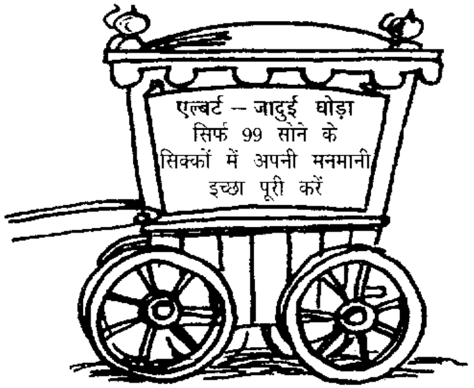

अध्याय 1

बहुत पहले, एक दूर-दराज़ के देश में एक बूढ़ा आदमी और उसका घोड़ा रहते थे। घोड़ा एक टूटी-फूटी गाड़ी को खींचता था। गाड़ी के एक ओर एक नोटिस चिपका था, जिस पर लिखा था :

एल्बर्ट — जादुई घोड़ा
सिर्फ 99 सोने के
सिक्कों में अपनी मनमानी
इच्छा पूरी करें

पिछले देश के मज़ेदार कारनामों के बाद, वे अभी-अभी इस देश में दाखिल हुए थे।

बूढ़े आदमी ने अपने घोड़े से कहा :

"यह तो बड़ा प्यारा देश लगता है। क्यों एल्बर्ट, है न?"

एल्बर्ट ने कहा, "हाँ।"

"देखो, यहाँ पर सुंदर फलों के बाग हैं, भेड़ों और बकरियों के झुंड हैं और थोड़ी-थोड़ी दूर पर, एक-दो शांत गाँव हैं। मुझे बस एक बात का डर है कि इस सुख-चैन के माहौल में, शायद यहाँ के लोगों को इच्छा पूरी करने वाले हमारे जादू की कहीं ज़रूरत ही न हो। हमें यहाँ पर शायद एक भी ग्राहक न मिले।"

एल्बर्ट ने कहा, "नहीं।"

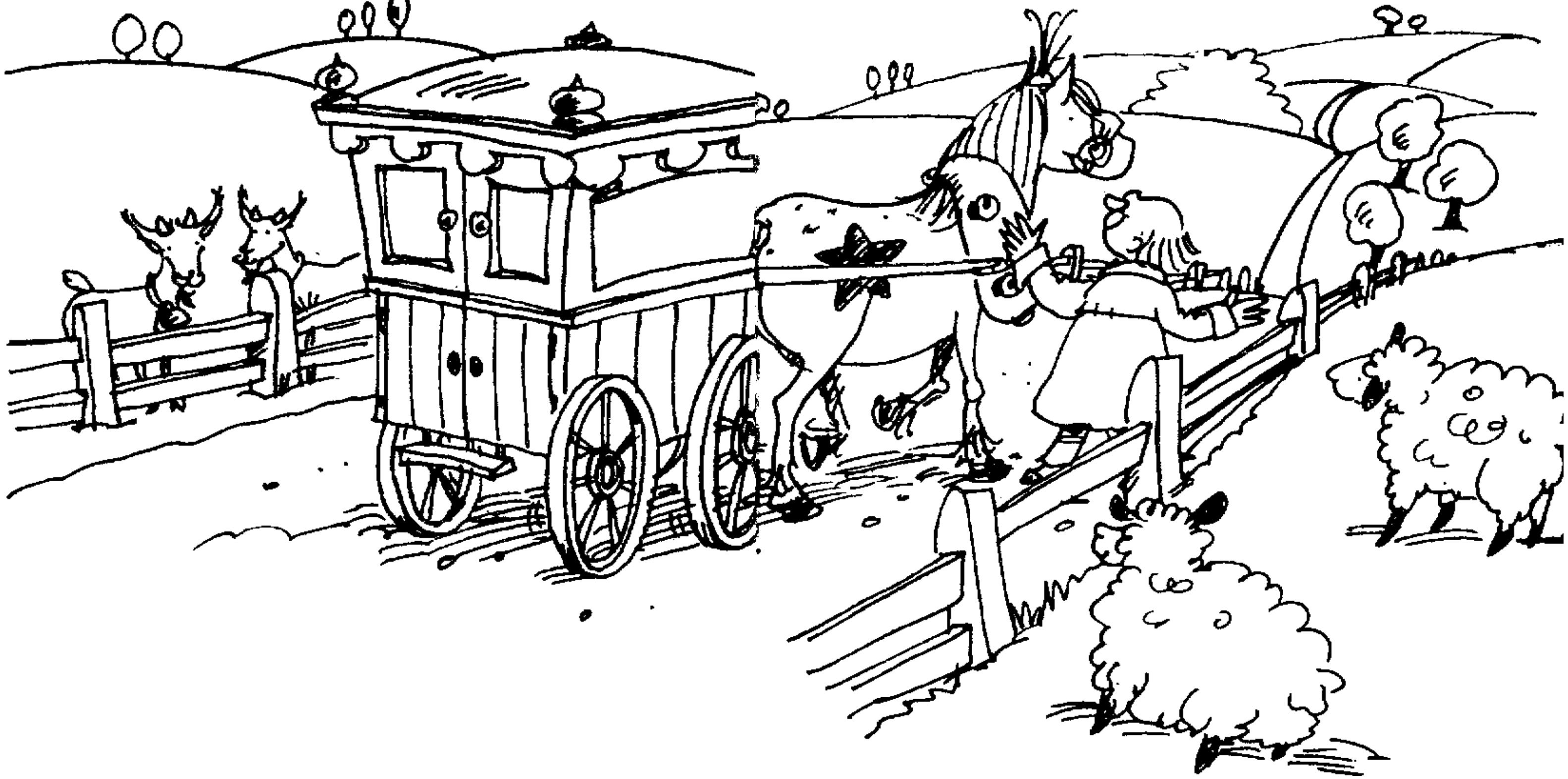

दोनों ने धूप में, खेतों के बीच अपनी यात्रा जारी रखी। थोड़ी ही देर बाद उन्हें झाड़ी के पीछे से शिकायत करती हुई एक आवाज़ सुनाई पड़ी : "... जब मैं सुबह पलंग से सो कर उठा, तब मुझे अपनी चप्पल ही नहीं मिली और फिर मेरा जैम लगा टोस्ट ज़मीन पर गिर पड़ा। हे भगवान! आज की सुबह कितनी ख़राब निकली! मैं दुकान से जो अंडे खरीद कर लाया था, वे एकदम बेस्वाद निकले और इस तेज़ धूप में तो मेरा सिर फटा जा रहा है! और जैसे, यह कोई कम मुसीबत हो, अब इस निकम्मी भेड़ ने अपना सिर झाड़ी में फँसा लिया है, और..."

बूढ़े आदमी और एल्बर्ट ने जब झाड़ी के पीछे झाँका, तो उन्हें एक गडेरिया अपने कुत्ते से बातें करता हुआ दिखा। गडेरिए ने उन्हें एक पेड़ की छाँव में, खाना खाने के लिए बुलाया और उन दोनों ने इस न्यौते को खुशी-खुशी स्वीकार किया।

वे लोग जब पानी पी रहे थे और उसकी दी डबलरोटी, पनीर और सेब खा रहे थे, तभी गडेरिए ने कहा, "दुख की बात है कि पिछले साल के सेब इनसे कहीं बेहतर थे। यह डबलरोटी एकदम सूखी है, पनीर भी पत्थर जैसा सख़्त है और पानी भी गर्म है. . . परंतु क्या करूँ, इसी का नाम ज़िंदगी है।"

तभी गडेरिए को गाड़ी पर लगा नोटिस दिखाई दिया। "अच्छा, तो आप लोगों की इच्छा पूरी करते हैं। मेरी ज़िंदगी की बस एक ही तमन्ना है।"

"सच में?" बूढ़े आदमी ने कहा, "और वह क्या है?"

"आप इस कुत्ते को देख रहे हैं? इसका नाम ऐरिक है और यह मेरा सबसे अच्छा दोस्त है। मुझे मालूम नहीं क्यों, परंतु बाक़ी लोग मेरी बातों से जल्दी ही ऊब जाते हैं, इसलिए मैं पूरे दिन कुत्ते को ही अपनी परेशानियाँ सुनाता रहता हूँ। जो कुछ भी मैं कहता हूँ, यह उसे सुनता है, परंतु मुझे कोई जवाब नहीं दे पाता। मेरी बस एक इच्छा है कि यह मेरी बातों का उत्तर दे सके।"

"क्या आप वाक़ई यह चाहते हैं?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

"हाँ, एकदम," गडेरिए ने कहा, "और मेरे पास निन्यानवे सोने के सिक्के भी हैं, जिन्हें मैंने छिपा कर रखा है।" उसके बाद गडेरिया, जिस पेड़ के नीचे वे बैठे थे उसके पीछे गया और दस मिनट तक कुछ खोदता रहा। जब वह वापिस आया तो उसके हाथों में, मिट्टी से सना एक डिब्बा था, जिसमें उसकी पूरी ज़िंदगी की बची, जमा-पूँजी थी।

"इसे संभालें। अब मैं यह चाहता हूँ कि आप किसी तरह, मेरे कुत्ते ऐरिक को बोलना सिखा दें।"

उसके बाद बूढ़ा आदमी, एल्बर्ट के पास गया और उसके कान में उसने कुछ फुसफुसाया।

और एल्बर्ट ने कहा, "नहीं।"

अचानक बिजली चमकी और . . .

"चलो, अच्छा हुआ!" कुत्ते ने गुर्राते हुए कहा, "अब मैं कम-से-कम बोल तो सकता हूँ, और तुम्हें अपनी परेशानियाँ सुना सकता हूँ।"

"वाह! यह तो कमाल हो गया!" गडेरिए ने कहा।

"पहली बात तो यह कि, कोई मुझे ऐरिक बुलाए, इससे मुझे सख़्त नफ़रत है। भला यह भी कोई नाम है? और जो बिस्किट मुझे खाने को

मिलते हैं, वे एकदम सूखे होते हैं। मुझे उनके साथ कोई रसीली चीज़ चाहिए। फिर, जिस कंबल में मैं सोता हूँ, वह एकदम खुरदुरा और बदबूदार है। और क्योंकि मैं तुम्हारे जितना ही मेहनती हूँ इसलिए, मुझे यह समझ में नहीं आता कि मैं तुम्हारे साथ, तुम्हारे मुलायम पलंग पर क्यों नहीं सो सकता? दूसरी बात यह है कि मैं अब भेड़ों के पीछे दौड़ते-दौड़ते तंग आ चुका हूँ, खासकर एक शैतान भेड़ ने तो मेरी नाक में दम कर दिया है...।"

गडेरिया कुत्ते की बातें सुनने में इतना मगन था कि वह, अपने मन की इच्छा-पूर्ति के लिए, बूढ़े आदमी को धन्यवाद देना ही भूल गया।

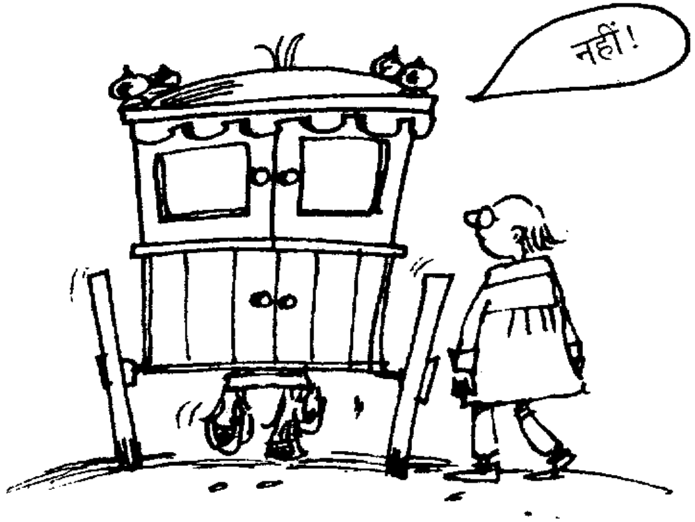

"मुझे लगता है कि हमें अब यहाँ से चलना चाहिए," बूढ़े ने कहा। फिर बूढ़ा और एल्बर्ट सड़क पर आगे चले। कुछ देर चलने के बाद उन्हें कुत्ते का गुर्राना और मालिक से अपनी परेशानियों का बयान करना, सुनाई देना बंद हो गया।

"क्या हमने इसकी इच्छा पूरी करके ठीक किया, एल्बर्ट?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

एल्बर्ट ने जवाब दिया, "नहीं।"

अध्याय 2

उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी। कुछ देर बाद दोनों, सड़क के पास बने एक छोटे से घर के सामने से गुज़रे। घर के दरवाज़े पर एक घमंडी औरत खड़ी थी जिसने कहा, "आइए, अतिथियों का स्वागत है। हाँ, अगर मेरी हालत बेहतर होती तो मैं बड़ी शान-शौकत से आपकी ख़ातिरदारी करती। तब मेरे नौकर आपकी अगवानी करते, ठंडा शरबत पिलाते और रात के सोने का इंतज़ाम करते। परंतु मैं क्या करूँ, मेरी बदनसीबी ही कुछ ऐसी है कि मेरे पास

सिर्फ एक कप, एक स्टूल और एक छोटा सा पलंग है।"

जो कुछ वह कह रही थी, सच था। वे देख सकते थे कि घर में केवल एक ही कमरा था। कमरे में एक कप, एक स्टूल और एक छोटे पलंग के अलावा, और कुछ नहीं था।

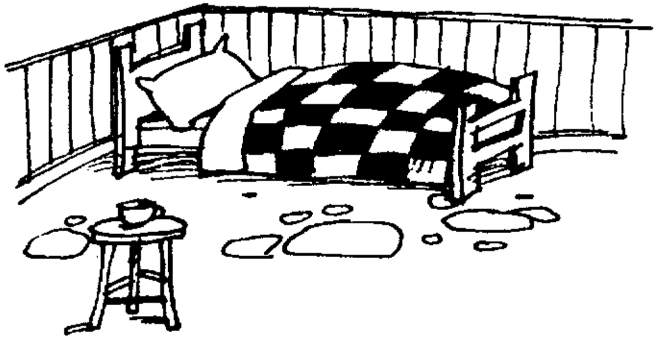

"देखिए," बूढ़े आदमी ने कहा, "एल्बर्ट और मैं बस चाय बनाने के लिए रुकने ही वाले थे। आप भी हमारे साथ क्यों न चाय पिएँ?"

और एल्बर्ट ने कहा, "हाँ।"

औरत इसके लिए राज़ी हो गई। चाय पीते समय, औरत को गाड़ी पर लगा जादुई घोड़े के ज़रिए इच्छाएँ पूरी करने वाला नोटिस दिखा।

"मेरी एक इच्छा है, जो मैं चाहती हूँ कि ज़रूर पूरी हो। दुर्भाग्य से मेरे पास पैसे नहीं हैं, क्योंकि

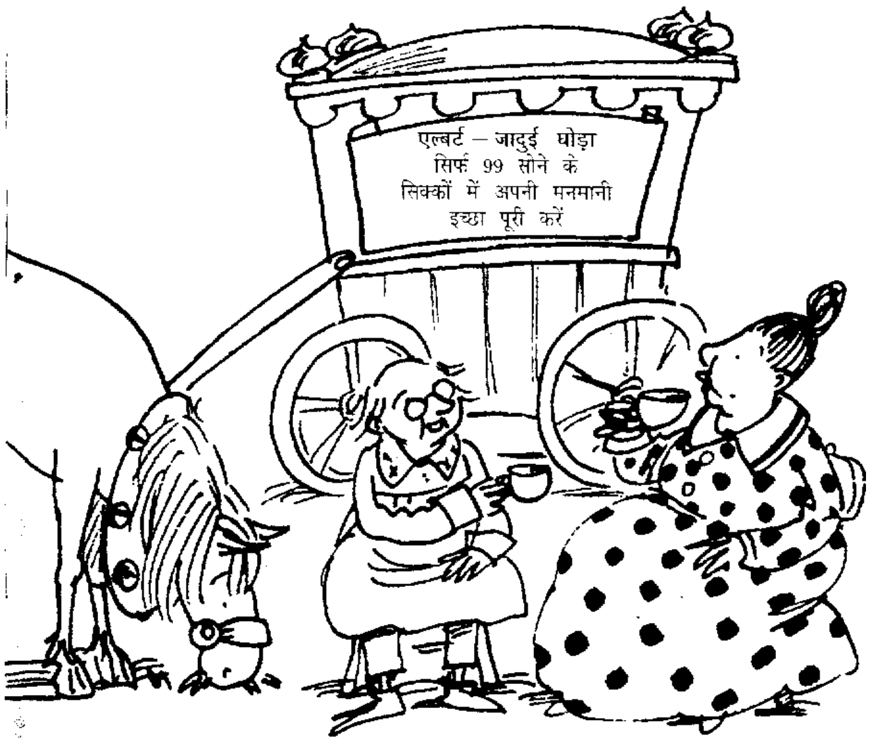

मेरा मानना है कि ऊँचे वर्ग की होने के नाते, मुझे पैसों के लिए काम नहीं करना चाहिए। परंतु मेरी पड़ोसिन के पास पैसे हैं और मैं उससे इतनी रक़म उधार देने को कहूँगी।"

सड़क पर, थोड़ा सा आगे जाकर, एक और छोटा सा घर था। एल्बर्ट और बूढ़ा आदमी, उस घमंडी औरत के पीछे-पीछे उस घर के सामने वाले दरवाज़े तक गए। घमंडी औरत ने दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाया। जो महिला अंदर से निकली, वह भी कोई खास रईस नहीं लगी। परंतु वह सभी को देखकर मुस्कुराई और उसने सबको आदर से घर के अंदर बुलाया। घर अंदर से आरामदेह था, उसका बाग बहुत ही सुंदर था और वह फलों और सब्जियों से भरा था।

"मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?" उसने पूछा।

उस घमंडी औरत ने गर्वीली आवाज़ में कहा, "तुम हमेशा कहती थीं कि तुम मेरी मित्र बनना चाहती हो। अपनी मनोकामना पूरी करने का, तुम्हारे पास, अब एक अच्छा मौक़ा है। मुझे, इस बूढ़े आदमी और उसके घोड़े से अपने मन की इच्छा पूरी करवाने के लिए, निन्यानवे सोने के सिक्के चाहिए।"

पहले तो पड़ोसिन को कुछ आश्चर्य हुआ, परंतु उसने कहा, "देखो, मैं तुम्हारी मित्र हूँ। इन फलों और सब्जियों को बड़ी मेहनत से उगा और बेचकर मैंने सौ सोने के सिक्के कमाए हैं, जिन्हें मैं अपनी लड़की की शादी पर खर्च करना चाहती हूँ। परंतु अगर तुम्हें इनकी सख़्त ज़रूरत हो, तो तुम इनमें से निन्यानवे ले सकती हो।"

फिर पड़ोसिन, छिपाए हुए स्थान से सिक्के निकाल कर लाई। मुस्कुराते हुए उसने सिक्कों को किचिन की मेज़ पर रखा।

घमंडी औरत ने उन सिक्कों पर झपटने और बूढ़े आदमी को देने से पहले कहा, “अब मेरी दिली तमन्ना पूरी करो, जिससे कि मैं उस शान-शौकत के साथ रह सकूँ जिसकी मैं हक़दार हूँ। मुझे हमेशा से पता था कि मैं इस, एक कमरे वाले छोटे से घर में रहने के लिए पैदा नहीं हुई हूँ, और न ही ऐसी पड़ोसिनों के साथ रहने के लिए।” यह कह कर, घमंडी औरत ने उस महिला की ओर इशारा किया जिसने उसे अभी-अभी अपनी जमा-पूँजी दी थी।

“तुम्हारी इच्छा क्या है?” बूढ़े आदमी ने पूछा।

“मैं एक महारानी बनने के लिए पैदा हुई थी। इसलिए मैं एक बड़ा सा महल चाहती हूँ, जिसमें सौ बड़े कमरे हों और सौ नौकर हों जो मेरे इशारों पर नाचें।”

फिर घमंडी महिला ने, पड़ोसिन के सिक्के उठाकर बूढ़े आदमी को दिए। बूढ़े आदमी ने जाकर एल्बर्ट के कान में कुछ फुसफुसाया।

और एल्बर्ट ने कहा, “नहीं।”

तभी ज़ोर की बिजली चमकी और . . .

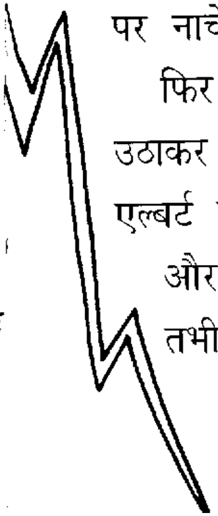

देखतें ही देखते, उस घमंडी औरत के छोटे से घर की जगह एक दस मंज़िलों वाला विशाल महल खड़ा हो गया। उसकी हरेक मंज़िल पर दस कमरे थे। महल के दरवाज़ों पर सौ नौकर खड़े थे, जो एकदम बनी-ठनी, नीली और सुनहरी पोशाकें पहने थे। घमंडी औरत अपनी नाक हवा में उठाए, गर्व से महल के दरवाज़े में घुसी। उसने बूढ़े आदमी, एल्बर्ट और अपनी दयालु पड़ोसिन को पूरी तरह अनदेखा किया। सारे नौकरों ने उसे झुककर सलाम किया और उसने उन्हें तुरंत, ढेर सारे काम करने के आदेश दिए :

"मेरे लिए खाना बनाओ! गाड़ी बुलवाओ! मेरे लिए सुंदर-सुंदर कपड़े बनवाओ! बाहर के मैदान की घास काटो! मेरे लिए क़ीमती हीरे-मोती लाओ!" और अंत में, "सब दरवाज़े बंद करो, जिससे कि साधारण लोग महल में न घुस सकें!"

फिर वह, किसी को धन्यवाद दिए बिना महल में घुस गई।

बूढ़े आदमी ने दयालु पड़ोसिन से हाथ मिलाया। पड़ोसिन उदास होकर, फिर से अपने बाग में खुदाई करने चली गई। बूढ़े आदमी ने चाय के कप बटोरे और दुबारा अपनी यात्रा शुरू की।

"एल्बर्ट, क्या हमने यहाँ पर कोई नेक काम किया?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

और एल्बर्ट ने जवाब दिया, "नहीं।"

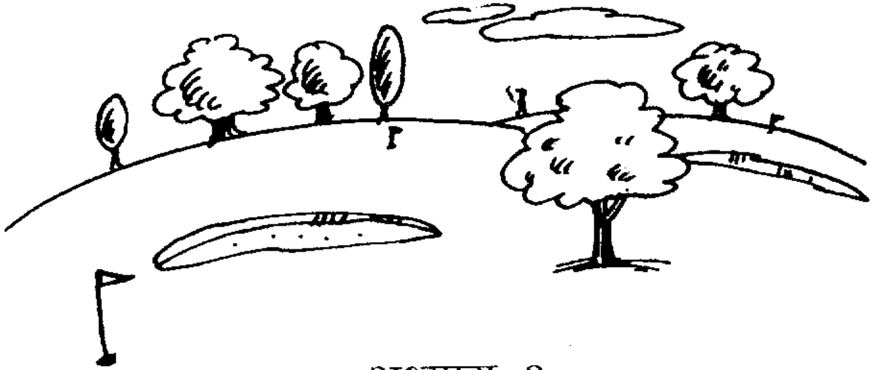

अध्याय 3

सड़क पर, थोड़ी दूर आगे चलने के बाद वे एक गोल्फ-कोर्स के पास से गुज़रे। वहाँ पर उन्हें छोटे-छोटे झंडे, हरी-हरी घास और रेत की खाईयाँ दिखाई दीं। इधर-उधर, कुछ खिलाड़ियों की जोड़ियाँ गोल्फ खेलती हुई दिखाई दीं।

जैसे ही वे कुछ झाड़ियों के पास से गुज़रे, बूढ़े आदमी और एल्बर्ट को कुछ गिरने की, टूटने की और ज़ोर से मारने-पीटने की एक भयानक आवाज़ सुनाई दी।

उसके बाद उन्होंने एक आदमी को चिल्लाते हुए सुना। वह गंदी-गंदी गालियाँ दे रहा था। उन्होंने ऐसे बेहूदे शब्द पहले कभी नहीं सुने थे।

"एल्बर्ट, तुम अपने कान बंद कर लो। ये बेहूदे शब्द किसी घोड़े के सुनने लायक नहीं हैं," बूढ़े आदमी ने कहा।

"हाँ," एल्बर्ट ने कहा और पैरों के खुरों से उसने अपने कान ढँक लिए।

अचानक, झाड़ियों में से एक सफेद गेंद निकली और कुछ टप्पे खाने के बाद, एक गहरे तालाब में जाकर गिर पड़ी और आँखों से ओझल हो गई। तभी, एक लाल चेहरे वाला आदमी झाड़ियों के पीछे से निकला। उसके कंधे से गोल्फ का थैला लटका था जिसमें गोल्फ खेलने के (ज़्यादातर टूटे हुए) बल्ले थे। वह आदमी, अभी भी गालियाँ दे रहा था।

"तुमने देखा क्या कि मेरी गेंद किधर गई है?" उसने गुस्से में पूछा।

"हाँ, वह उस तालाब में गिरकर डूब गई है," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया।

गोल्फ के खिलाड़ी ने, कुछ और बेहूदा बातें कहीं और फिर अपने बल्ले को भी तालाब में फेंक दिया। फिर उसने गोल्फ की टोपी को ज़मीन पर पटका और उस पर ऊपर-नीचे कूदने लगा। "बस, अब मैं इस बेकार खेल को कभी नहीं खेलूँगा!"

उसने उस कार्ड को भी फाड़ कर फेंक दिया जिस पर वह खेल की हार-जीत का हिसाब लिखता था।

बूढ़े आदमी ने हमदर्दी दिखाते हुए कहा, "ऐसा लगता है कि जैसे, आज का दिन आपके लिए बहुत सफल नहीं रहा है?"

"मैं किसी भी दिन सफल नहीं होता हूँ!" गोल्फ खिलाड़ी चिल्लाया। तभी उसकी निगाह, गाड़ी पर लिखे नोटिस के ऊपर पड़ी।

"क्या तुम सच ही लोगों की इच्छाएँ पूरी करते हो?"

"हाँ, करते हैं," बूढ़े आदमी ने कहा।

और एल्बर्ट ने भी कहा, "हाँ।"

फौरन गोल्फ खिलाड़ी ने, अपने बटुए में से निन्यानवे सोने के सिक्के निकाल कर दिए और कहा, "मेरी इच्छा है कि मैं सबसे अच्छा गोल्फ का खिलाड़ी बनूँ। मैं इस खेल में हरेक को हरा सकूँ और खुद कभी भी न हारूँ।"

बूढ़े आदमी ने जाकर एल्बर्ट के कान में कुछ फुसफुसाया।

और एल्बर्ट ने कहा "नहीं।"

तभी ज़ोर से बिजली चमकी और . . .

उसके बाद खिलाड़ी ने एक नई गोल्फ की गेंद को ज़मीन पर रखा और एक बल्ले को चुनकर, उससे गेंद को मारा। गेंद तेज़ी से हवा को काटती हुई गई और एक टप्पा खाने के बाद, काफी दूरी पर स्थित छेद में जाकर गिर गई।

“कमाल!” उस आदमी ने कहा और फिर उसने दूसरी गेंद के साथ भी वैसा ही किया। खिलाड़ी, बिना धन्यवाद दिए, खुशी से उछलता और हवा में अपने बल्ले को लहराता हुआ गायब हो गया।

“यह ग्राहक संतुष्ट हुआ। तुम क्या सोचते हो, एल्बर्ट?” बूढ़े आदमी ने पूछा।

और एल्बर्ट ने जवाब दिया, “नहीं।”

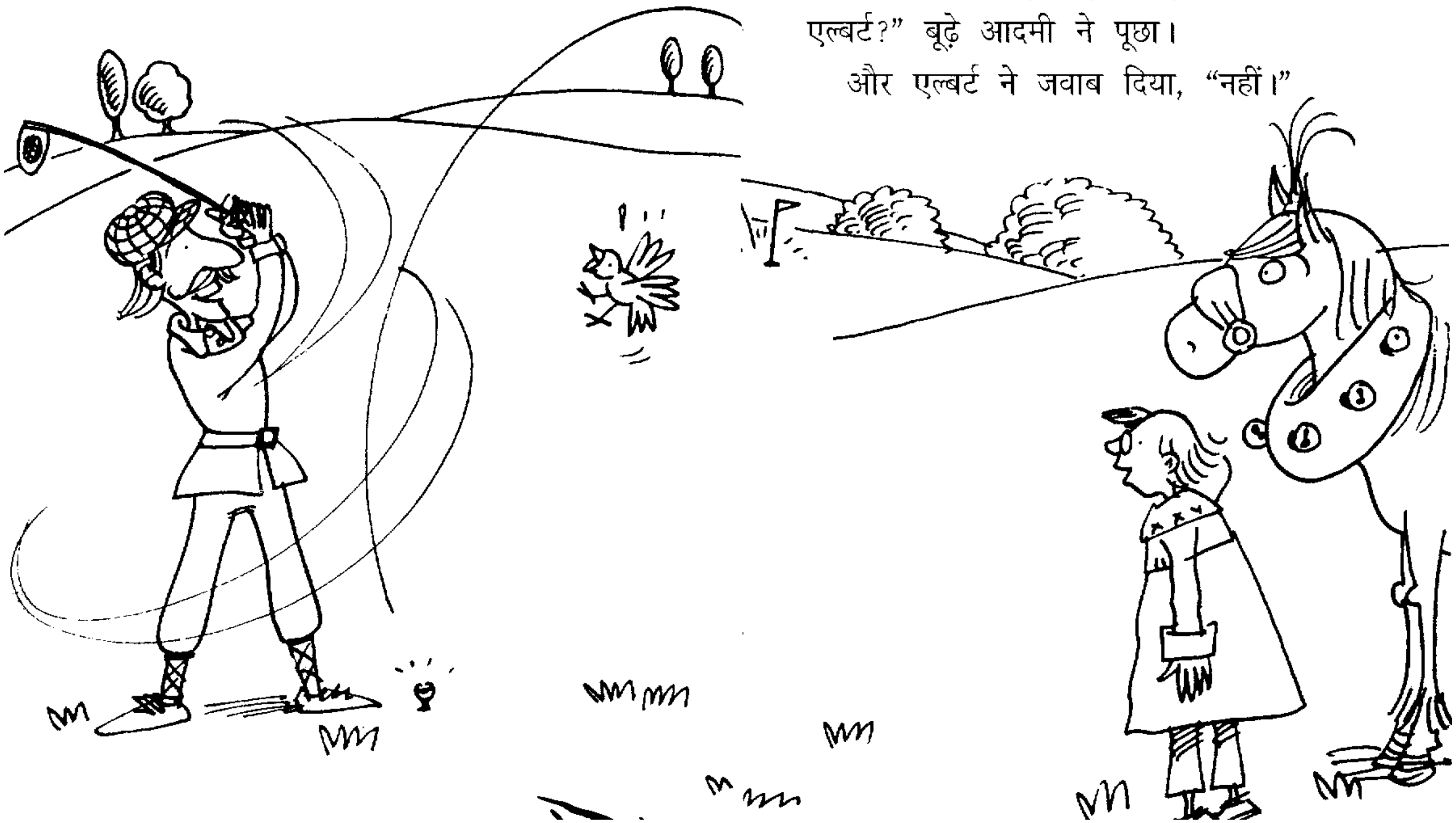

अध्याय 4

इसके कुछ दिन बाद वे एक बड़े, संपन्न शहर में पहुँचे। शहर के बीच में उन्हें एक बड़ी खूबसूरत हवेली दिखाई दी। ज़ाहिर है कि वह किसी बहुत रईस परिवार की थी। हवेली के दरवाज़े के पास एक लड़का कुर्सी पर बैठा ऊँघ रहा था। ऐसा लगता था कि जैसे वह, जिंदगी से बिलकुल ऊब गया हो। उसने बेहद मँहगे और बेशकीमती कपड़े पहने हुए थे।

"अबे, तुम लोग!" वह लड़का बदतमीज़ी से चिल्लाया।

एल्बर्ट और बूढ़ा आदमी उसकी आवाज़ सुनकर रुक गए। लड़के का ध्यान गाड़ी पर चिपके नोटिस पर गया।

"मैं देख रहा हूँ कि तुम लोगों की इच्छा पूरी करते हो। इसलिए तुम लोगों को फौरन मेरी इच्छा पूरी करनी होगी," लड़के ने कहा। "दरअसल मैं इकट्ठी, पचास इच्छाएँ खरीदना चाहता हूँ, क्योंकि निन्यानवे सोने के सिक्के खर्च करना मेरे लिए कुछ भी नहीं है। मेरे पिता, इस पूरे देश के सबसे रईस आदमी हैं।"

"मैं माफ़ी चाहता हूँ, परंतु तुम केवल एक ही इच्छा खरीद सकते हो," बूढ़े आदमी ने जवाब दिया। "देखो, एल्बर्ट एक बार में किसी की केवल एक ही इच्छा पूरी कर सकता है। उसमें केवल इतनी ही जादुई ताक़त है। बाद में उसे, अपनी जादुई बैटरियाँ दुबारा चार्ज करनी पड़ती हैं। क्यों, ठीक है न, एल्बर्ट?"

और एल्बर्ट ने कहा, "हाँ।"

"बेवकूफ़ घोड़ा! बेवकूफ़ आदमी!

चलो, अभी हम एक इच्छा से ही शुरू करें।" और फिर उस लड़के ने चुटकी बजाई और कुछ इशारा किया। फ़ौरन एक नौकर भाग कर, निन्यानवे सोने के सिक्के ले आया। "मैं चाहता हूँ कि दुनिया के सारे खेल मेरे पास हों। अभी। इसी मिनट!"

बूढ़े आदमी ने एल्बर्ट के कान में कुछ फुसफुसाया।

और एल्बर्ट ने कहा, "नहीं।"

तभी ज़ोर से बिजली चमकी और . . .

तुरंत ही हवेली के बड़े-बड़े बागों में दुनिया भर के सभी खेलों की चीजें और सामान के ढेर लग गए—फुटबाल, नेटबाल, टेनिस, शतरंज, बैडमिंटन, स्नूकर, बेसबाल, तलवारबाजी, मोनोपली, क्रिकेट, ताश, बास्केटबाल, टेबिल-टेनिस, डार्ट्स,

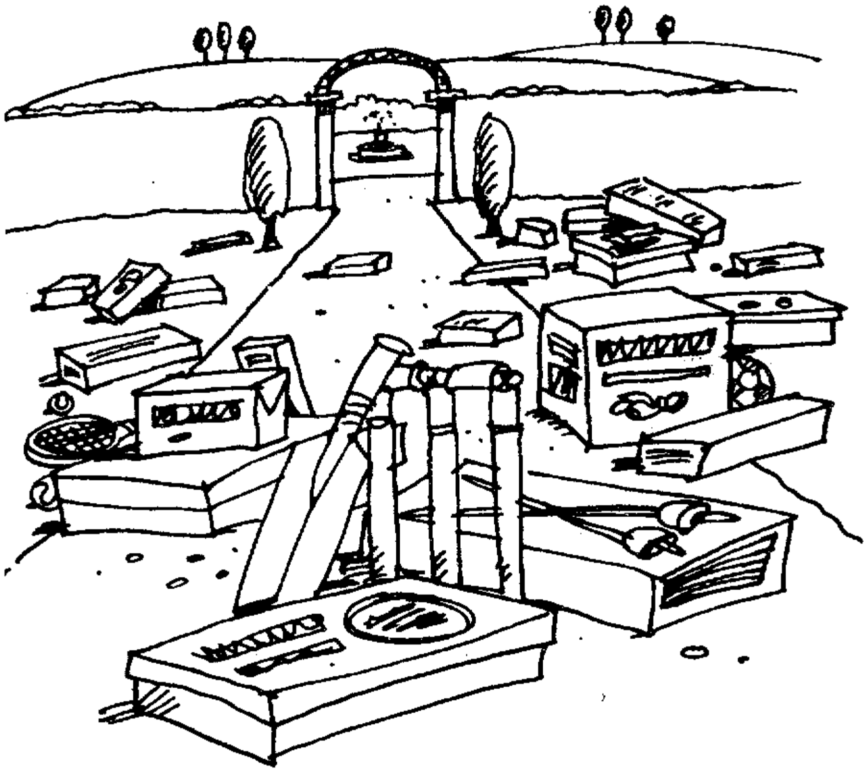

आइस-हाकी, साँप-सीढ़ी, बॉक्सिंग, और इसी तरह के सैकड़ों अन्य खेल। यह सब सामान एकदम नया था और अभी तक पैकिटों में बंद था।

"वाह! यह सब कुछ मेरा है!" लड़के ने कहा। और फिर वह पैकिटों को फाड़ने लगा और चीज़ों को इधर-उधर फेंकने लगा। बहुत से नौकरों को, दौड़-दौड़ कर उन्हें उठाना पड़ा।

जब वह पचास के क़रीब पैकिट खोल चुका तो अचानक, उसके मन में एक शंका पैदा हुई।

"ज़रा सुनो, बूढ़े आदमी! इन खेलों के साथ, मैं खुद अकेले तो खेल नहीं सकता हूँ, क्यों?"

"नहीं," बूढ़े आदमी ने कहा, "इनके साथ खेलने के लिए तुम्हें कुछ अन्य साथियों को खोजना पड़ेगा।"

"किसी और को?"

"हाँ, इन्हें तुम किसी और के साथ बाँटोगे, तो तुम दोनों को कुछ मज़ा आएगा।"

"बाँटना? यह क्या होता है? बाँटना?" लड़के ने उलझन और गुस्से में पूछा।

"हम लोग अब चलते हैं, तुम्हें इसका उत्तर खुद ही तलाश करना होगा," बूढ़े आदमी ने कहा। फिर लड़के को गुस्से में छोड़कर, बूढ़े आदमी और एल्बर्ट ने आगे की यात्रा शुरू करी।

अध्याय 5

कुछ देर बाद उन्हें एक लड़की दिखाई दी, जो सड़क पर दौड़ी चली जा रही थी। लड़की काफ़ी दुखी नज़र आ रही थी।

"क्या कुछ गड़बड़ है?" बूढ़े आदमी ने उससे पूछा।

"हाँ, मेरे दादाजी की तबीयत बहुत ख़राब है। जंगल में उनके ऊपर एक पेड़ गिर पड़ा और उससे उनके दोनों पैर टूट गए। उन्हें बहुत तेज़ दर्द हो रहा है। मैं अभी दौड़ कर डाक्टर को बुलाने के लिए गई

थी, परंतु उसने आने से इंकार कर दिया।"

"क्यों?"

"क्योंकि हमारे पास डाक्टर को देने के लिए पूरे पैसे नहीं हैं – और यह बात एकदम सच है, क्योंकि हम लोग बहुत गरीब हैं। मेरी बस एक ही इच्छा है कि किसी तरह, अपने दादाजी की मदद कर सकूँ!" और यह कह कर लड़की रोने लगी।

"देखो, हम लोगों की इच्छा पूरी करते हैं। क्यों, है न, एल्बर्ट?" बूढ़े आदमी ने कहा।

"हाँ," एल्बर्ट ने कहा।

लड़की ने गाड़ी पर टँगा नोटिस भी पढ़ा। "परंतु मेरे पास तो निन्यानवे सोने के सिक्के हैं नहीं – सिर्फ पाँच ही सिक्के हैं जो मैंने डाक्टर को देने चाहे थे।"

"ख़ैर," बूढ़े आदमी ने कहा, "अगर तुम्हें दुनिया की कोई चीज़ माँगनी हो, तो तुम क्या चाहोगी? पैसे? ज़ेवर? ज़मीन? सत्ता? सुंदरता?"

"इनमें से कुछ भी नहीं! बस, मेरी एक ही इच्छा होगी कि, किसी तरह मेरे दादाजी की तबीयत फिर से ठीक हो जाए।"

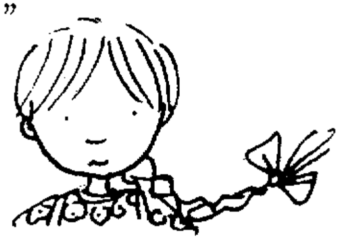

बूढ़े आदमी ने एल्बर्ट की ओर मुड़ कर कहा, "हम लोग आमतौर पर तो मुफ़्त में काम करते नहीं हैं। क्यों, है न? परंतु इस मौके पर हम इस नियम को क्यों न तोड़ दें?"

"हाँ, हाँ," एल्बर्ट ने कहा।

फिर बूढ़े आदमी ने जाकर एल्बर्ट के कान में कुछ फुसफुसाया।

तुरंत बिजली चमकी और . . . .

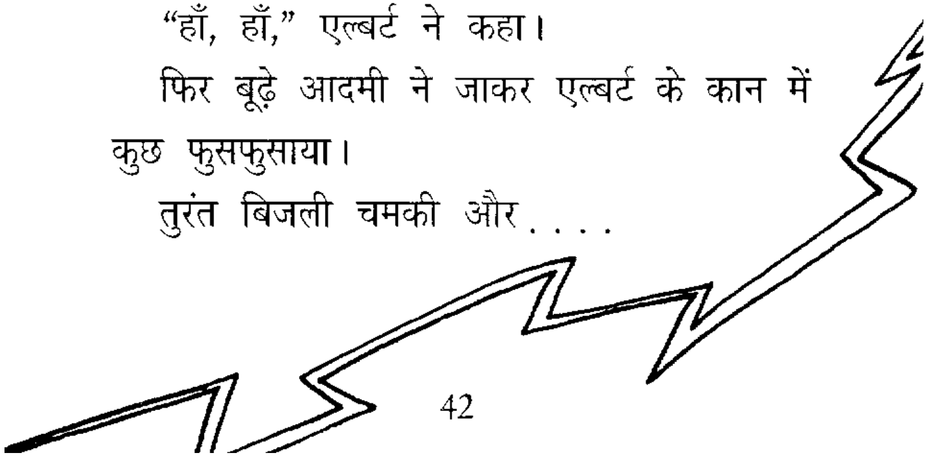

फिर सड़क के मोड़ से एक उमर-दराज़ आदमी आता हुआ दिखाई दिया। वह नाचता और कूदता हुआ आ रहा था। वह पास आते समय लड़की का ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी छड़ी को हवा में हिला रहा था।

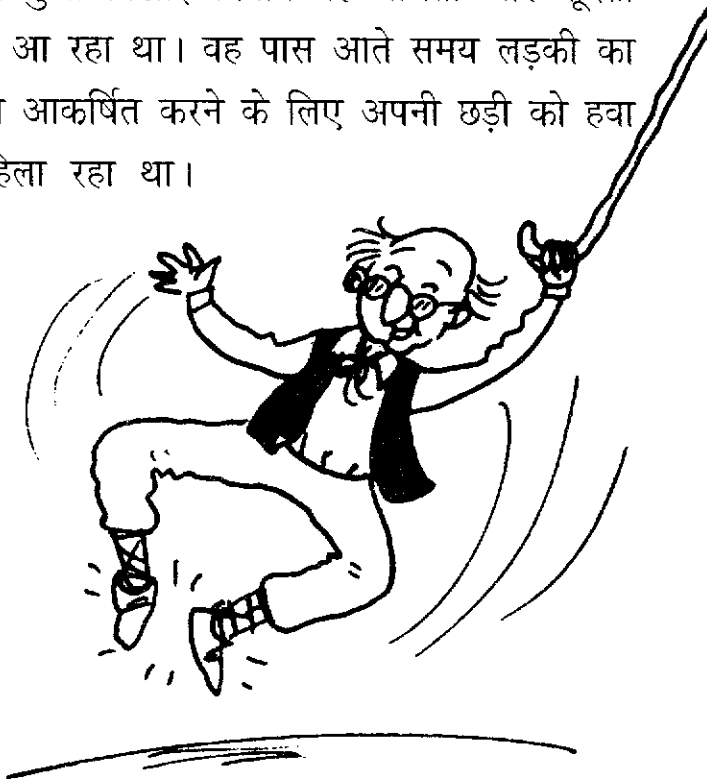

"ज़रा देखो, क्या कमाल हो गया, मेरी प्यारी बच्ची! मुझे बहुत दर्द हो रहा था और फिर अचानक मेरे पैर एकदम ठीक हो गए, और अब वे पहले से कहीं अधिक ताक़तवर हैं।"

यह कह कर उन्होंने हवा में, एक छलाँग लगाई और किसी नर्तक की तरह गोल-गोल घूमने लगे।

“बहुत-बहुत धन्यवाद! शुक्रिया!” लड़की ने हँसते हुए बूढ़े आदमी को गले लगाया और एल्बर्ट की बालों वाली नाक को चूमा। लड़की के दादाजी ने भी, उनका बहुत-बहुत शुक्रिया अदा किया। फिर लड़की और दादाजी दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े, हँसते-कूदते वहाँ से चले गए।

“चलो, इस बार हमने पैसे तो नहीं कमाए, पर मुझे लगता है कि हमने एक ग्राहक को संतुष्ट ज़रूर किया, एल्बर्ट!”

और एल्बर्ट ने कहा, “हाँ।”

अध्याय 6

इस तरह काफ़ी दिन बीत गए। एल्बर्ट और बूढ़ा आदमी लगभग पूरा देश घूम चुके थे। इस देश की सीमा को छोड़कर दूसरे देश में ग्राहक खोजने के लिए जाने से पहले, उन्होंने आख़िरी रात एक सस्ती सराय में बिताने की सोची। खाना खाने के बाद वे सराय के बगीचे में, एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे। तभी उन्हें किसी के गुर्राने की आवाज़ सुनाई दी, जो धीरे-धीरे तेज़ होती चली गई।

"... और फिर जो हड्डी तुमने मुझे खाने को दी उसमें बिलकुल भी मांस नहीं था। मैंने तुम्हें कभी भी, इस तरह की सूखी हड्डी खाते हुए नहीं देखा। तुम सिर्फ मांस ही खाते हो। हाँ, एक बात और, मुझे हमेशा पीने के लिए केवल पानी ही क्यों मिलता है? मैं भी तुम्हारी तरह, बियर क्यों नहीं पी सकता? हाँ, उस बेवकूफ भेड़ एमिली से तो मैं बिलकुल तंग आ चुका हूँ।"

ये आवाज़ें, गडेरिए और उसके बोलने वाले कुत्ते की थीं।

"प्लीज़, प्लीज़, मुझे बचाइए," उस गडेरिए ने बूढ़े आदमी से प्रार्थना की। "कृपा करके इस कुत्ते का मुँह

बंद करें! जबसे आपने मेरी इच्छा पूरी की है तबसे यह शिकायत करते-करते थकता ही नहीं।"

"इससे आपको पता चला होगा कि मुझे, इतने सालों तक क्या-क्या झेलना पड़ा होगा," कुत्ते ने गुर्राते हुए कहा।

"मैं आपसे कोई शिकायत नहीं करूँगा," गडेरिए ने वादा किया, "अगर आप इस कुत्ते की आवाज़ को हमेशा के लिए बंद कर दें तो।"

"अगर मेरे मालिक ने इससे सही सबक सीख लिया हो, तो मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा," कुत्ता भी इस बात पर राज़ी हो गया।

बूढ़ा आदमी, एल्बर्ट की ओर मुड़ा। "एक असंतुष्ट ग्राहक, एल्बर्ट! क्या तुम्हें लगता है कि हमें उसके सिक्के वापिस कर देने चाहिए?"

और एल्बर्ट ने कहा, "हाँ।"

उसके बाद बूढ़े आदमी ने गडेरिए को सोने के सिक्के वापिस लौटाए और फिर उसने जाकर एल्बर्ट के कान में कुछ फुसफुसाया।

अचानक बिजली चमकी और...

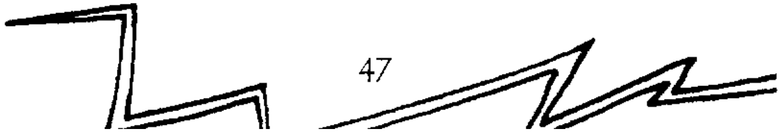

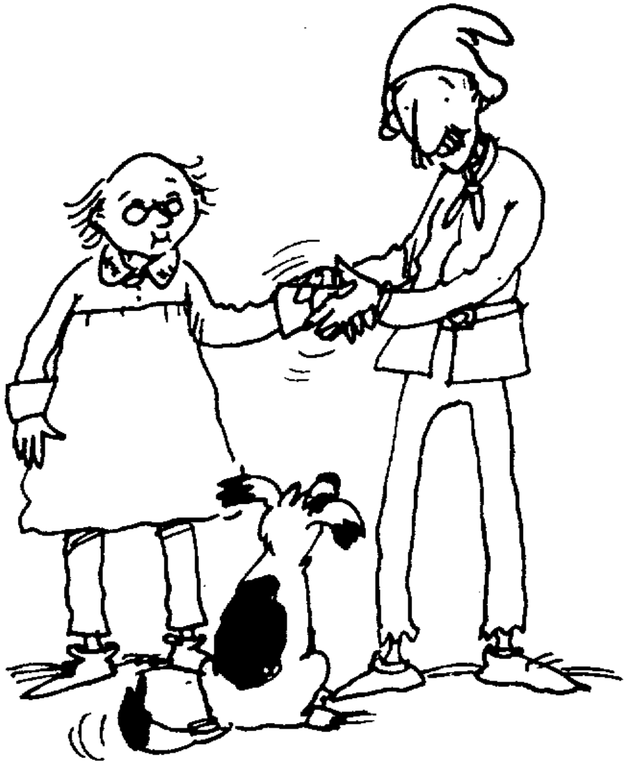

और कुत्ता भौंकने लगा, "भों-भों, भों-भों!"

इससे गडेरिए को बहुत चैन मिला। उसने शुक्रिया अदा किया। फिर वह अपने रास्ते चला और उसके पीछे-पीछे अब उसका चुप (परंतु दुम हिलाता) कुत्ता भी हो लिया।

इसके तुरंत बाद, छोटे से घर में रहने वाली घमंडी औरत अचानक आ खड़ी हुई। वह बड़ी परेशान लग रही थी और उसकी दयालु पड़ोसिन, जिसने उसे सिक्के उधार दिए थे, उसे लगातार दिलासा दे रही थी।

"कृपा करके उस सौ कमरे वाले महल को खत्म कर दीजिए और उसके साथ उन सौ नौकरों को भी," उसने रोते हुए कहा।

"अरे, क्या हुआ?" बूढ़े आदमी ने पूछा, "क्या कुछ गड़बड़ हो गई?"

"देखिए, आपने मुझे सौ कमरे वाला महल दिया था, यह ठीक है। परंतु वे सभी कमरे, एकदम खाली थे। उनमें रखने के लिए मेरे पास केवल एक कप, एक स्टूल और एक पलंग ही था।"

“पर उन सौ नौकरों का क्या हुआ?” बूढ़े आदमी ने पूछा। “आप उनसे कुछ और फर्नीचर लाने को कह सकती थीं।”

“मैं उन नौकरों को आदेश दूँ, यह उन्हें बिलकुल भी पसंद नहीं था। जब उन्होंने देखा कि मेरी माली हालत इतनी कमज़ोर है और मेरें पास इतनी कम चीज़ें हैं तो उन्होंने तनख्वाह न मिलने के कारण, मेरे लिए काम करना बंद कर दिया। मेरे पास नाम मात्र को भी पैसे नहीं थे। इसलिए सारे नौकर, मुझे सौ कमरों वाले महल में अकेला छोड़कर चले गए। मैं अपनी पूरी ज़िंदगी में, इतनी दुखी कभी भी नहीं हुई हूँ। इसलिए मैं अपना पुराना, छोटा सा घर दुबारा वापिस चाहती हूँ। वह छोटा ज़रूर था, परंतु वह मेरा अपना था और मैं इत्मीनान से उसका खर्च उठा सकती थी।”

“तुमने वाकई ही बहुत कष्ट सहे हैं,” दयालु पड़ोसिन ने उसे गले लगाते हुए कहा।

“मैं बहुत शर्मिंदा हूँ कि मैंने तुम्हारे साथ पहले बहुत गलत और रूखा बर्ताव किया, मेरी मित्र, पर

अब मुझे मालूम पड़ा है कि तुम ही मेरी एक मात्र असली मित्र हो।”

“एक और असंतुष्ट ग्राहक, एल्बर्ट!” बूढ़े आदमी ने कहा। “क्या तुम्हें ऐसा लगता है कि हमें इसके सिक्के वापिस कर देने चाहिए?”

और एल्बर्ट ने कहा, “ना।”

“अरे हाँ, यह तो मैं भूल ही गया कि सिक्के इसके नहीं, परंतु इसकी दयालु पड़ोसिन के थे।” फिर उसने उन सिक्कों को, पड़ोसिन को सुरक्षित वापिस लौटा दिया।

उसके बाद बूढ़े आदमी ने जाकर एल्बर्ट के कानों में कुछ फुसफुसाया।

अचानक बिजली चमकी और . . .

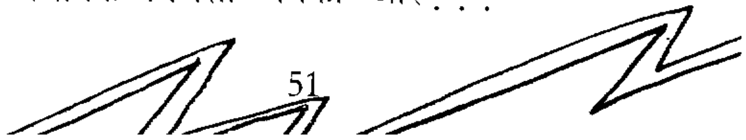

उस औरत के घर की दिशा से, अचानक किसी चीज़ के ढहने की तेज़ आवाज़ आई। बूढ़े आदमी ने उसे विश्वास दिलाया कि वापिस पहुँचने पर, सौ कमरों वाला महल और उसके सौ नौकर ग़ायब हो जाएँगे और उनकी जगह पर उसका एक-कमरे वाला घर, जैसा पहले था वैसा ही खड़ा होगा। उस

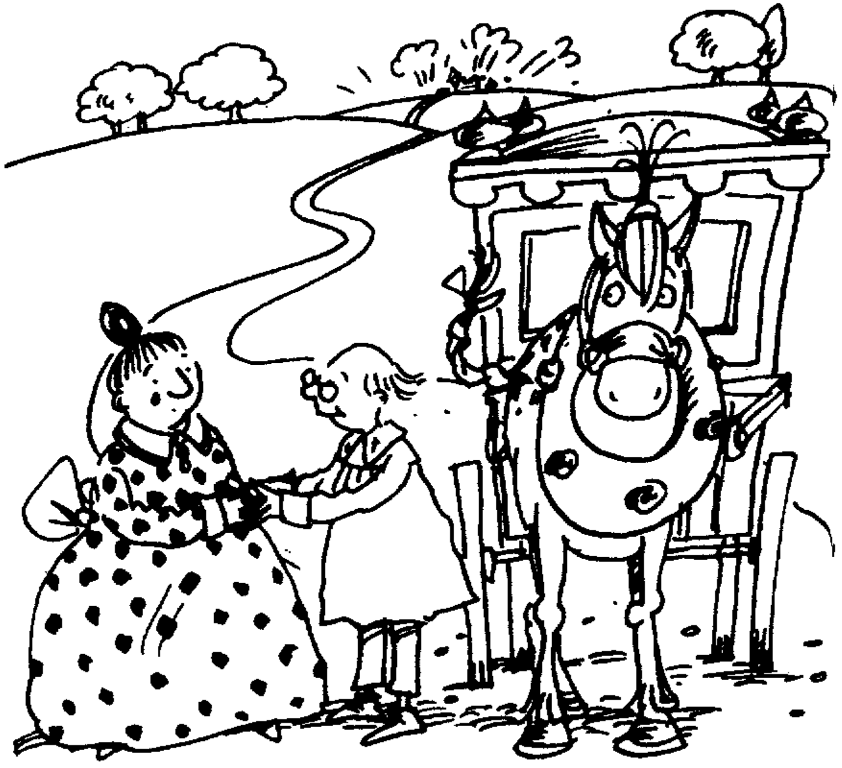

घर में केवल एक कप, एक स्टूल और एक पलंग ही होगा। यह सुनकर उस औरत की खुशी का ठिकाना न रहा और वह, अपनी एक मात्र सच्ची मित्र के गले में हाथ डाले, फौरन घर की ओर रवाना हो गई। उन दोनों ने तय किया कि अब से वे दोनों साथ मिलकर मेहनत करेंगी और बाज़ार के लिए फल और सब्ज़ियाँ उगाएँगी।

अध्याय 7

इसके कुछ ही देर बाद, गोल्फ का खिलाड़ी भी टपक पड़ा। वह अभी भी गोल्फ का थैला उठाए हुए था – परंतु अब उसमें गेंद को मारने का केवल एक ही बल्ला था। वह बहुत उदास दिखाई दे रहा था।

“क्यों भाई, क्या तुम्हें अपने खेल में अभी भी मज़ा आ रहा है?” बूढ़े आदमी ने पूछा।

“नहीं, अब मैं एकदम उम्दा तरीके से खेलता हूँ,” गोल्फ के खिलाड़ी ने इस बात को स्वीकार किया, “मैं आजकल हरेक गेम जीत जाता हूँ।”

“फिर तुम्हारा मुँह क्यों लटका हुआ है?”

“क्योंकि, हरेक बार जब कभी भी मैं गेंद को मारता हूँ वह सीधे छेद में जाकर गिरती है। चाहे मेरा मुँह किसी ओर हो, चाहे मैं कोई सा भी बल्ला इस्तेमाल करूँ, और चाहे कितनी भी दूरी हो, मेरे एक ही स्ट्रोक में ही गेंद सीधे छेद में जा गिरती है।”

“हमेशा?” बूढ़े आदमी ने पूछा।

“हाँ, हमेशा। मैंने बल्ले की जगह गेंद को छतरी से, फावड़े से, झाड़ी की डंडी से, यहाँ तक कि, अपने दोस्त के लकड़ी के बने कृत्रिम पैर से भी मारा है। और हर बार, मैं सभी अट्ठारह छेदों को सिर्फ अट्ठारह स्ट्रोकों में ही पूरा कर लेता हूँ।”

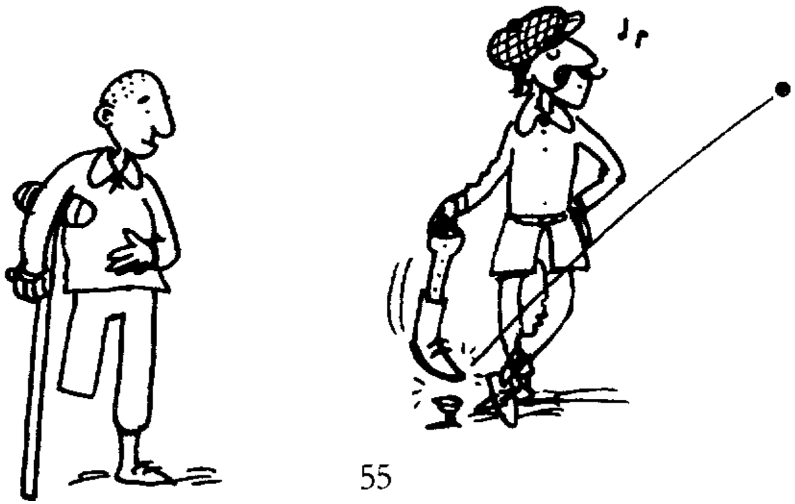

"परंतु, क्या यह अच्छी बात नहीं है?" बूढ़े आदमी ने पूछा।

"दरअसल यह कोई अच्छी बात नहीं है, क्योंकि अब मेरे साथ कोई खेलना ही नहीं चाहता। सच बात तो यह है कि खेल का सबसे अच्छा खिलाड़ी होना काफ़ी उबाऊ बात होती है, क्योंकि तब खेल को बेहतर करने और अभ्यास करने के लिए, कुछ भी नहीं रह जाता है। मैंने जो इच्छा आपसे पहले पूरी कराई थी, अगर आप उसे वापिस नहीं लेंगे तो मैं कसम खाता हूँ कि जिंदगी में दुबारा कभी भी गोल्फ नहीं खेलूँगा!"

"हे भगवान! एल्बर्ट, यह तो एक और असंतुष्ट ग्राहक लगता है। क्या हम इसके सिक्के भी लौटा दें?"

और एल्बर्ट ने कहा, "हाँ।"

बूढ़े आदमी ने निन्यानवे सोने के सिक्कों को लौटाया और फिर जाकर एल्बर्ट के कान में कुछ फुसफुसाया।

और एल्बर्ट ने कहा, "नहीं।"

अचानक बिजली चमकी और . . .

जब खिलाड़ी ने दुबारा गोल्फ की गेंद को ज़मीन पर रखकर, एक बल्ले से मारा तो चार बार लगातार कोशिशों के बाद भी गेंद सही निशाने पर नहीं पहुँची। अंत में जब उसने ज़ोर लगाकर गेंद को मारा तो वह सीधे, सराय की खिड़की के काँच से जाकर टकराई। काँच टूट कर चकनाचूर हो गया। सराय का मालिक गुस्से से आग-बबूला हो गया और खिलाड़ी को टूटे हुए काँच का हरजाना भुगतना पड़ा।

इस सब के बावजूद, खिलाड़ी मुस्कुरा रहा था (और गालियाँ दे रहा था)। खिलाड़ी, बूढ़े आदमी से हाथ मिलाकर और एल्बर्ट की पीठ सहलाकर, खुशी-खुशी वापिस लौटा। अब वह दुनिया का सबसे अव्वल नंबर का खिलाड़ी नहीं था। वह अभ्यास और मेहनत से अपने खेल को बेहतर करना चाहता था।

तभी अचानक एक बड़ी मँहगी, सुनहरे रंग की कार धड़धड़ाती हुई आई। उसका दरवाज़ा झटके के साथ खुला और उसमें से वह रईस लड़का कूद कर बाहर निकला। उसका लाल चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था।

"अरे, तुम!" वह चिल्लाया।

"क्या तुम मुझे और एल्बर्ट को बुला रहे हो?" बूढ़े आदमी ने शांत आवाज़ में पूछा।

"हाँ, शायद आपको उन ढेर सारे बेवकूफ खेल-खिलौनों की याद हो, जिन्हें आप मेरे पास छोड़ गए थे?"

"जिन्हें पाने की तुम्हारी प्रबल इच्छा थी? हाँ, हमें उनकी अच्छी तरह याद है।"

"मुझे जल्दी ही इस बात का पता चल गया कि मैं उन खेलों को अकेले नहीं खेल सकता था। मुझे उनके साथ खेलने के लिए कुछ अन्य साथियों की ज़रूरत होती। मुझे उन खेलों को दूसरे साथियों के साथ बाँटना पड़ता।"

"हाँ," बूढ़े आदमी ने कहा।

और एल्बर्ट ने भी कहा "हाँ!"

"देखिए, मैंने अपने नौकरों को बाहर से पचास ग़रीब बच्चों को बुलाकर लाने को कहा। फिर मैंने उन बच्चों से कहा, 'देखो! इसी मिनट, मेरे साथ फुटबाल खेलो!' या फिर 'देखो! मेरे साथ अभी-अभी, डोमीनो खेलो!' और आपको पता है कि उन सब बच्चों ने मुझे क्या जवाब दिया?"

"नहीं?" बूढ़े आदमी ने कहा।

और एल्बर्ट ने भी कहा, "नहीं।"

उस लड़के ने अपने पैरों को ज़मीन पर पटकते हुए कहा, "उनमें से हरेक बच्चे ने मुझ से कहा, 'हमें नहीं खेलना है तुम्हारे साथ, बदतमीज़ लड़के! तुम भागो यहाँ से।' "

बूढ़े आदमी ने अपना सिर हिलाया। "और मैं भी वही कहूँगा। तुम भागो यहाँ से, बदतमीज़ लड़के!"

और एल्बर्ट ने कहा, "हाँ। हाँ।"

"क्या!" उस लड़के का चेहरे गुस्से से एकदम नीला हो गया। परंतु अब वह कुछ भी नहीं कर सकता था। उसको सिक्के भी वापिस नहीं मिले।

बूढ़े आदमी ने जाकर एल्बर्ट के कान में कुछ फुसफुसाया।

और एल्बर्ट ने कहा, "हाँ।"

अचानक बिजली चमकी और . . .

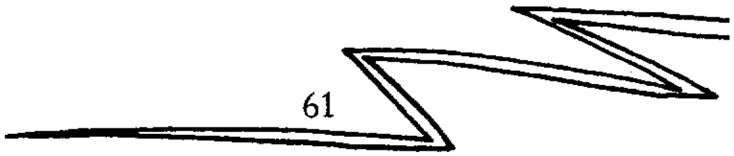

उस लड़के की हवेली में से, सारे खेल ग़ायब हो गए और वे पचासों गरीब बच्चे अपने घरों के पिछले दरवाज़ों के सामने आ गए। ये वही बच्चे थे जिन्हें उस रईस लड़के ने खेलने के आदेश दिए थे।

वह रईस लड़का अपनी मँहगी कार में बैठकर कुछ सोचने लगा। उसे अहसास हुआ कि उसे अपनी चीज़ों को दूसरों के साथ बाँटना चाहिए, तभी शायद कोई उससे दोस्ती करेगा।

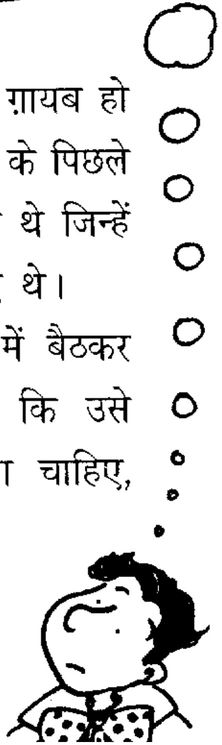

अंत में लड़की और उसके दादाजी मुस्कुराते हुए आए।

"हम लोग एक बार फिर आपसे धन्यवाद कहने आए हैं," उन दोनों ने कहा, "आपने हमारी मदद की, इसलिए हम आपके लिए एक उपहार लाए हैं। एल्बर्ट के लिए हम एक जौ का बोरा और एक थैले में सेब लाए हैं और आपके लिए घर में बना पनीर, मक्खन और डबलरोटी लाए हैं।"

बूढ़ा आदमी और एल्बर्ट इन उपहारों से बहुत खुश हुए। उन्होंने उस सामान को यात्रा के लिए अपनी गाड़ी में रख लिया।

उसके बाद उन्होंने सीमा को पार कर, दूसरे देश में प्रवेश किया। शायद वहाँ भी कुछ ऐसे लोग हों, जिन्हें दूसरों के साथ नम्रता से पेश आने और अपनी इच्छाओं को उचित रूप से उपयोग करने की ज़रूरत हो।

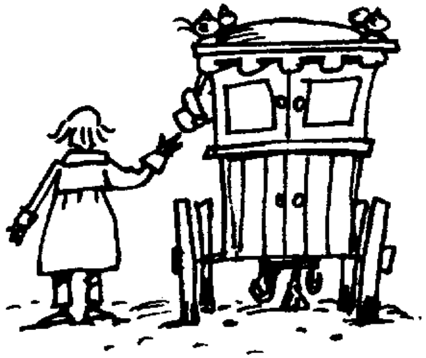

[इति]